MT - 114

Seat No. | | | | | | | |

2014 1100

MT - 114 - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - PRELIM - II - PAPER - I

Time : 3 Hours **(Pages 6)** **Max. Marks : 80**

प्रश्न 1. अ) निम्नलिखित विधान के साथ दिए गए विकल्पों में से पठित गद्यपाठों के आधार पर सही विकल्प जोड़कर प्रत्येक विधान पूर्ण वाक्य में लिखिए : **2**

1) उठने में देर नहीं हुई इसका मंगली को विश्वास हुआ क्योंकि ----------

(अ) मुर्गे ने बाँग नहीं दी थी ।

(ब) पंछी चहक नहीं रहे थे ।

(क) अभी तो सूरज भी नहीं उगा है ।

2) तौलिया गीला, वजनदार हो गया था क्योंकि ----------

(अ) वह पानी की बाल्टी में गिरा था ।

(ब) वह वर्षा में भीग गया था ।

(क) फूड इन्स्पेक्टर के लगातार रोने से वह पूरा भीग गया था ।

आ) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पठित गद्यपाठों में प्रयुक्त शब्दों से कीजिए । पूर्ण वाक्य लिखकर प्रयुक्त शब्द अधोरेखांकित कीजिए : **3**

1) सामान्यतया ..... के मौसम में इसके पत्ते गिरते हैं ।

2) उस गरम हुए ..... को उनसे छुड़ा लें ।

3) पिता का ..... होने पर हम दिल्ली चले आए ।

इ) निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं तीन</u> प्रश्नों के उत्तर पठित गद्यपाठों के आधार पर केवल <u>एक - एक वाक्य</u> में लिखिए : **3**

1) विवेकानंद जी को कहाँ आत्मसाक्षात्कार हुआ था?

2) असुर शब्द के कौन-से दो अर्थ हैं ?

3) रात के अंधकार में दस - बारह मनुष्य क्या कर रहे थे ?

4) मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में कौन - सी मीटिंग और कहाँ संपन्न हुई ?

5) कसाई ने भेड़ किससे मोल ली थी ?

ई) **निम्नलिखित वाक्यों में से <u>किसी एक</u> वाक्य को किसने किस संदर्भ में कहा है ? पठित गद्यपाठों के आधारपर लिखिए :** **2**

1) ''अब हमारे चलने का समय हो गया है।''
2) ''अब आगे बतलाओ कि क्या किया जाए ?।''

उ) **निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं तीन</u> प्रश्नों के उत्तर पठित गद्यपाठों के आधार पर संक्षेप (60 -70 शब्दों) में लिखिए :** **9**

1) फूड इन्स्पेक्टर राष्ट्र के सबसे बड़े पद का आफर मिलने पर भी क्यों ठुकरा देता है ?
2) रामू की बहू ने बिल्ली की हत्या की क्या योजना बनाई और क्यों ?
3) टीले पर घने वृक्ष के नीचे दोनों शिकारियों ने क्या देखा ? संन्यासी ने उनके बारे में क्या खुलासा किया ?
4) भक्तिमार्ग पर चलने वालों के लिए वाणी किस प्रकार उपयोगी सिद्ध होती है ?
5) हताश विनायक बाबू घर पहुँचे तो उन्होंने क्या अनुभव किया ?

ऊ) **निम्नलिखित पठित गद्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर <u>एक - एक वाक्य</u> में लिखिए :** **3**

यह पर्णपाती वृक्ष है। अर्थात वर्ष में एक बार इसके सभी पत्ते गिर जाते हैं और यह पर्णविहीन हो जाता है। सामान्यतया सर्दियों के मौसम में इसके पत्ते गिरते हैं और गर्मियों के मौसम में फूलों के समाप्त होते - होते नए पत्ते निकलने आरंभ हो जाते हैं। पलाश का वृक्ष जब एक छोटी झाड़ी के रूप में होता है, तभी इसमें बड़े - बड़े पत्ते निकलने लगते हैं। सामान्यतया यह देखा गया है कि जहाँ फूल निकलते हैं, वहाँ पत्ते नहीं निकलते और जहाँ पत्ते निकलते हैं, वहाँ फूल नहीं निकलते।

1) पलाश को 'पर्णपाती वृक्ष' क्यों कहा जाता है ?
2) सर्दी और गर्मी में पलाश की क्या स्थिति रहती है ?
3) परिच्छेद में पलाश की कौन - सी खासियत सूचित हुई है ?

प्रश्न 2. क) निम्नलिखित पद्यपंक्तियों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पठित पद्यपाठों में प्रयुक्त शब्दों से कीजिए : **3**

1) बोली ..... लता ओट हो किवार की।
2) तुम विशाल ..... पर, खून से विजय लिखो।
3) और नहीं ..... में भी गति।

ख) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पठित पद्यपाठों के आधार पर केवल <u>एक - एक वाक्य</u> में लिखिए :** **3**

1) घाट पर पूरी व्यवस्था किसके लिए है ?
2) कवि 'नीरज' ने जीवनभर उड़ते रहने की प्रेरणा किसे दी है ?
3) झरना किस प्रकार रोड़ों से लड़ता चलता है

ग) निम्नलिखित पठित पद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए : 3

''शोषित कोई कहीं न जन रहे,
पीड़न - अन्याय अब न मन सहे ,
जीवनशिल्पी प्रथम, प्रधान हो !''

1) जनमन को अब क्या नहीं सहना चाहिए ?
2) समाज में कैसे लोग शेष नहीं रहने चाहिए ?
3) प्रस्तुत पद्यांश किस पद्य से लिया गया है?

घ) निम्नलिखित पठित पद्यखंड का सरल गद्यार्थ लिखिए : 3

निर्झर कहता है - बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर ।
यौवन कहता है - बढ़े चलो, सोचो मत क्या होगा चलकर ।।

ङ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर पठित पद्यपाठों के आधार पर संक्षेप में लिखिए : 6

1) चंद्रमा का खिलौना न मिलने पर कृष्ण अपनी माँ यशोदा से क्या कहते हैं ?
2) कवि रहीम ने सहनशीलता का महत्त्व कैसे समझाया है ?
3) कवि ने 'जनगीत' में नए विहान के लिए क्या-क्या आवश्यक माना है ?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर पठित पूरक पाठों के आधार पर 70 - 80 शब्दों में लिखिए : 8

1) लेखिका शिवानी ने अतिथिशाला की भयानकता को कैसे अनुभव किया ?
2) समाजसेवक ईश्वरचंद्र विद्यासागर की महानता किस प्रसंग से दृष्टिगोचर होती है ?
3) भूटान जाते समय भारतीयों का डॉलर खरीदने का झंझट क्यों नहीं रहता ?
4) ईसाई धर्म में तुलसी का क्या महत्त्व है ?

अथवा

निम्नलिखित पठित पूरक पाठों में से किसी एक का सार लिखिए :

1) अपनी - अपनी बीमारी
2) गंगा बाबू हैं कौन ?

प्रश्न 4. च) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द का स्वतंत्र एवं अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए : 1

1) काश ! 2) लिए

छ) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य में अधोरेखांकित शब्द का शब्दभेद लिखिए : 1

1) उसने ड्यूटी निभाई ।
2) बैलगाड़ी धीरे - धीरे चलती है ।

ज) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य का कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार काल - परिवर्तन कीजिए : 1

1) आनंद का क्षण आता था। (पूर्ण भूतकाल)

2) माँ चिंता में पड़ती है। (सामान्य भूतकाल)

झ) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य में प्रयुक्त सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए : 1

1) तुम रोज आया करो।

2) कबरी बिल्ली घी - दूध पर जुट गई थी।

अथवा

निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक क्रिया का सहायक क्रिया के रूप में अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए।

1) पाना 2) बनना

ट) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक क्रिया के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियारूप लिखिए : 1

1) महकना 2) पूछना

अथवा

निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य में प्रयुक्त प्रेरणार्थक क्रियारूप छाँटकर उसका प्रकार लिखिए :

1) राजेश ने सीटी बजाई।

2) रमा ने नीतू से कहकर परेश से पत्र भिजवाया।

ठ) निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए : 2

1) पंडित परमसुख का नाक सिकुड़ गया।

2) प्रकृतिसौंदर्य की जादू काम कर गई।

3) शराबी की नशा उतर गई।

अथवा

निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों के लिए योग्य विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए:

1) मैंने कहा भैया मत रोओ सिर दुखेगा

2) इसे संस्कृत में किंशुक (क्या यह शुक है) कहा गया है

3) ये बरगद नीम पीपल आदि के समान फैले हुए होते हैं

(ड) निम्नलिखित मुहावरों में से <u>किन्हीं तीन</u> मुहावरों के हिंदी में अर्थ देकर उनका अर्थपूर्ण एवं स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए: 3

1) साफ कर देना ।
2) ढाक के तीन पात ।
3) बिजली की तरह फैलना ।
4) जान आफत में आना ।
5) जान के लाले पड़ना ।

अथवा

निम्नलिखित वाक्यों में से <u>किन्हीं तीन</u> वाक्यों में अधोरेखांकित वाक्यांशों के बदले कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से योग्य मुहावरे का प्रयोग करके शुद्ध वाक्य फिर से लिखिए :

(पैर पकड़ना, ताँता बँधा रहना, सिहर उठना, कान खड़े रहना, जान में जान आना)

1) गाँधीजी के दर्शन के लिए आश्रम में हमेशा लोगों की भीड़ लगी रहती थी ।
2) मानसून की वर्षा आरंभ हुई तब कहीं जाकर किसानों को धीरज प्राप्त हुआ ।
3) सीमा पर देश की रक्षा के लिए हमारे जवान सदा सचेत रहते हैं ।
4) एकाएक डाकू को सामने देखकर मुनीम भयभीत हो गया ।
5) मोहन ने अपनी गलती के लिए पिता से माफी माँगी ।

प्रश्न 5. निम्नलिखित विषयों में से <u>किसी एक</u> विषय पर लगभग 150- 200 शब्दों तक निबंध लिखिए: 10

1) घायल सैनिक की आत्मकथा ।
2) विज्ञान : वरदान या अभिशाप ।
3) यदि समाचार पत्र न होते..... ।
4) मेरा प्रिय नेता ।

प्रश्न 6. (त) निम्नलिखित कार्यालयीन तथा व्यावसायिक पत्रों में से <u>किसी एक</u> पत्र का प्रारूप (नमूना) लिफाफे सहित तैयार कीजिए : 4

1) करन / करिश्मा वेद, बगीचा बिल्डिंग, कोल्हापुर से सार्वजनिक गणेशोत्सव के समय 24 घंटे ऊँची आवाज में रेकार्ड बजाने के कारण अध्ययन में बाधा पड़ती है, अतः उसकी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए शहर कोतवाल, शहर विभाग, कोल्हापुर के नाम पत्र लिखता / लिखती है ।
2) दिवाकर /दिव्या कदम, सुंदर धाम, गुड़गाँव से शास्त्री विद्यालय के प्रधानाध्यापक को मासिक शुल्क माँफ करवाने के लिए प्रार्थना पत्र लिखता /लिखती है ।

अथवा

निम्नलिखित विज्ञापन का प्रारूप (नमूना) तैयार कीजिए ।

बाजार में बेचने के लिए 'वाशिंग पाउडर' का प्रचार करना है ।

(थ) निम्नलिखित रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखिए । यह भी दर्शाइए कि उससे क्या सीख मिलती है । 4

रूपरेखा : एक चरवाहा – झूठ बोलने की आदत – शेर आया, शेर आया कहकर चिल्लाना – लोगों का दौड़कर मदद के लिए आना – चरवाहे का हँसना – लोगों का लौट जाना – तीन-चार बार ऐसा ही करना – एक बार सचमुच शेर का आना – चरवाहे का मदद के लिए चिल्लाना – किसी का न आना – शेर का उसे मार डालना – सीख ।

(द) **निम्नलिखित अपठित गद्यखंड पर आकलन हेतु ऐसे <u>चार प्रश्न</u> तैयार कीजिए, जिनके उत्तर <u>एक - एक वाक्य</u> में हो :** **4**

सुंदर प्रतिभा, मनभावनी चाल और स्वच्छंद प्रकृति ये ही दो-चार बातें देखकर मित्रता की जाती है। पर जीवन-संग्राम में साथ देने वाले मित्रों में इनसे कुछ अधिक बातें चाहिए। मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें पर जिसे हम स्नेह न कर सकें। जिससे हम अपने छोटे काम को तो निकालते जाएँ पर भीतर ही भीतर घृणा करते रहें। मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें। भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीतिपात्र बना सकें। हमारे और मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए, ऐसी सहानुभूति जिससे दोनों मित्र एक दूसरे की बराबर खोज-खबर लें। ऐसी सहानुभूति, जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे। मित्रता के लिए आवश्यक नहीं हैं कि दो मित्र एक ही प्रकार का कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में भी बराबर की प्रीति और मित्रता देखी जाती है।

Best Of Luck 👍

MT-115

2014 1100

MT - 115 - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - PRELIM - II - PAPER - I

Time : 3 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 80**

उ.**1.**	**अ) निम्नलिखित विधान के साथ दिए गए विकल्पों में से पठित गद्यपाठों के आधार पर सही विकल्प जोड़कर प्रत्येक विधान पूर्ण वाक्य में लिखिए :**	
1)	उठने में देर नहीं हुई इसका मंगली को विश्वास हुआ क्योंकि **अभी तो सूरज भी नहीं उगा है।**	**1**
2)	तौलिया गीला, वजनदार हो गया था क्योंकि **फूड इन्स्पेक्टर के लगातार रोने से वह पूरा भीग गया था।**	**1**
	आ) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पठित गद्यपाठों में प्रयुक्त शब्दों से कीजिए। पूर्ण वाक्य लिखकर प्रयुक्त शब्द अधोरेखांकित कीजिए :	
1)	सामान्यतया **सर्दियों** के मौसम में इसके पत्ते गिरते हैं।	**1**
2)	उस गरम हुए **बरतन** को उनसे छुड़ा लें।	**1**
3)	पिता का **तबादला** होने पर हम दिल्ली चले आए।	**1**
	इ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर पठित गद्यपाठों के आधार पर केवल एक - एक वाक्य में लिखिए :	
1)	विवेकानंद जी को त्रिशूल शिखरों में आत्मसाक्षात्कार हुआ था।	**1**
2)	'असुर' शब्द का एक अर्थ है 'बिना सुर का' और दूसरा अर्थ है 'राक्षस'।	**1**
3)	रात के अंधकार में अस्त्र- शस्त्रों से सुसज्जित दस - बारह मनुष्य मिर्जई पहने चरस का दम लगा रहे थे।	**1**
4)	मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में लघु उद्योग पर राज्य स्तर मीटिंग 'गोल्डन गेट' में संपन्न हुई।	**1**
5)	कसाई ने गड़रिए से भेड़ मोल ली थी।	**1**
	ई) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य को किसने किस संदर्भ में कहा है ? पठित गद्यपाठों के आधारपर लिखिए :	
1)	राजकुमार ने संन्यासी का आतिथ्य स्वीकार किया था। रात के दस बजे थे। घना अँधेरा छाया हुआ था। इसी समय राजकुमार से शिकार पर चलने का इशारा करते हुए यह वाक्य संन्यासी ने कहा है।	**2**
2)	पंडित जी ब्राह्ममुहूर्त में बिल्ली की हत्या के पाप के लिए कुंभीपाक नरक का विधान बताते हैं। वे कहते हैं कि वे प्रायश्चित से सब कुछ ठीक कर लेंगे। इसी संदर्भ में रामू की माँ उनसे यह वाक्य कहती है।	**2**

	उ) निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं तीन</u> प्रश्नों के उत्तर पठित गद्यपाठों के आधार पर संक्षेप (60 -70 शब्दों) में लिखिए :	
1)	लेखक 'अजातशत्रु' जी ने 'राजा हरिश्चंद्र के आँसू' पाठ में भ्रष्टाचार में लिप्त सरकारी अधिकारी 'फूड इन्स्पेक्टर' की घूसखोरी का रोचक वर्णन किया है । घूसखोर फूड इन्स्पेक्टर ग्वालों से रिश्वत लेकर मालामाल होता जा रहा था । उसे खाने - पीने का शुद्ध सामान मिलता था । उसके घर में शुद्ध दूध की कोई कमी नहीं थी । वह घी का व्यापार नहीं करता था परंतु उसके घर में घी के कनस्तर रखे रहते थे । वह काला था किंतु उसके गाल एकदम लाल थे । उसके बच्चे मोटे - ताजे थे । रिश्वत का ही परिणाम था कि उसकी बीवी गहनों से लदी रहती थी । वह हफ्ते में एक बार शहर के बाहर नाके पर अवश्य खड़ा होता और देहात से दूध लाने वालों के दूध में डिग्री लगाता था । जिसके दूध में पानी होता उसका सैंपल लेकर उसे कचहरी में मिलने का भय दिखाता और उससे दूध में पानी मिलाने की मात्रा के हिसाब से हफ्ता लेता । वह शहर के होटलों में भी दूध की जाँच करता था, जिससे उसे अच्छा हफ्ता मिलता था । इस प्रकार फूड इन्स्पेक्टर घूसखोरी न मिलने की संभावना के चलते राष्ट्र के सबसे बड़े पद का आफर मिलने पर भी उसे ठुकरा देता ।	**3**
2)	लेखक 'भगवतीचरण वर्मा'जी ने 'प्रायश्चित' पाठ के माध्यम से धर्म के नाम पर श्रद्धा और विश्वास के साथ खिलवाड़ करने वाले लोगों की स्वार्थभरी मानसिकता पर करारा व्यंग्य किया है । कबरी बिल्ली के हौसले बढ़ जाने से रामू की बहू का घर में रहना मुश्किल हो गया। कबरी बिल्ली की वजह से उसे सास की मीठी झिड़कियाँ सुनने को मिलती थी और उसके पतिदेव को रूखा - सूखा भोजन मिलता था । एक दिन रामू की बहू ने रामू के लिए खीर बनाई । उस खीर में पिस्ता, बादाम, मखाने और तरह - तरह के मेवे डाले गए, सोने का वर्क चिपकाया गया । उस खीर के कटोरे को कमरे के ऊँचे ताक पर रखा गया ताकि बिल्ली वहाँ न पहुँच सके । इसके बाद रामू की बहू पान लगाने में लग गई । इतने में बिल्ली कमरे में आई, छलाँग मारी और कटोरा झनझनाहट की आवाज के साथ फर्श पर गिर गया । आवाज सुनकर रामू की बहू कमरे में आई । उसने देखा कि खीर फर्श पर पड़ी थी और बिल्ली खीर खा रही थी । यह देखकर उसके सिर पर खून सवार हो गया । उसे रात भर नींद नहीं आई । वह सोचती रही कि कैसे कबरी पर वार किया जाए जिससे कबरी जिंदा न बचे । सुबह रामू की बहू ने एक कटोरा दूध कमरे के दरवाजे की देहरी पर रख दिया । कुछ देर बाद उसने देखा कि कबरी बिल्ली दूध पर जुटी हुई थी । मौका हाथ में आ गया। उसके हाथ में पाटा था, उसने सारा बल लगाकर पाटा बिल्ली पर पटक दिया । बिल्ली न हिली, न डुली, न चीखी, न चिल्लाई । बस एकदम उलट गई । इस प्रकार कबरी बिल्ली से तंग आकर रामू की बहू ने उसकी हत्या की योजना बनाई ।	**3**
3)	अमर कहानीकार 'प्रेमचंद' जी ने 'शिकारी राजकुमार' पाठ में स्वार्थलोलुप, हिंसक, विलासी शासकों को फटकारते हुए जनकल्याण के प्रति शासक के धर्म पालन की उम्मीद जताई है ।	**3**

संन्यासी रात के दस बजे कुटी से शिकारी राजकुमार को लेकर लगभग घंटाभर चलने के बाद एक ऐसे स्थान पर पहुँचा, जहाँ एक ऊँचे टीले पर घनें वृक्षों के नीचे आग जलती दिखाई पड़ी । संन्यासी ने राजकुमार को रूकने का इशारा किया । दोनों एक पेड़ की ओट में खड़े होकर ध्यानपूर्वक देखने लगे । राजकुमार ने बंदूक भर ली । टीले पर घने वृक्ष के नीचे हट्टे - कट्टे दस - बारह लोग हथियारों से लैस होकर चरस का दम लगा रहे थे । राजकुमार को संन्यासी ने इनके बारे में बताया कि ये लोग बड़े शिकारी हैं । ऐसे हिंसक पशु हैं जो राह चलते यात्रियों का शिकार करते हैं । इनके जुल्म से अनेक गाँव बरबाद हो गए हैं । यह बताना मुश्किल है कि इन्होंने कितने लोगों को मारा हैं । वास्तव में शिकार करने लायक तो पशु यही हैं । इसी से प्रजा की रक्षा होगी ।

इस प्रकार टीले पर घने वृक्ष के नीचे दोनों शिकारियों ने हिंसक लूटेरों का दृश्य देखा और संन्यासी ने उनके अत्याचार का खुलासा किया ।

4) सुप्रसिद्ध लेखक 'विनोबा भावे' जी ने 'वाणी का सदुपयोग' पाठ में सत्य, मित और मधुर वाणी के सभ्य और उचित प्रयोग के महत्त्व को बताया है । **3**

भक्तिमार्ग की मुख्य शिक्षा ही यही है कि हमें अपनी वाणी से हर पल ईश्वर का नाम लेते रहना चाहिए । जीवन में जागरुकता लाने के उद्देश्य से संतों ने भी यही उपदेश दिया है कि शरीर को सांसारिक कार्यों में व्यस्त रखकर भी वाणी से सिर्फ ईश्वर के नाम का ही उच्चारण होते रहना चाहिए क्योंकि वाणी का ही मन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है । यदि कोई सुंदर भजन सुनते हुए सो जाए तो सुबह उठते ही वही भजन अपने आप स्मरण हो जाता है । भजन का मनभावन नाद (ध्वनि, शब्द) नींद में भी मन में घूमता रहता हैं । भक्त कवि तुलसीदास जी ने अंतर की आत्मा और बाहर के जगत के मध्य वाणी को देहरी माना है । वाणी द्वारा रामनाम जपते रहने से ही सर्वत्र कल्याणकारी प्रकाश जगमगा उठता है । अर्थात हमारे मन के अंदर और शरीर के बाहर दोनों तरफ यदि हमें कल्याणकारी प्रकाश चाहिए तो वाणी रुपी देहरी पर रामनाम का बिना तेल-बाती का मणिदीप रखना होगा ।

इस प्रकार भक्ति मार्ग पर चलने वालों के लिए वाणी कल्याणकारी सिद्ध होती है ।

5) लेखक 'राजेंद्र श्रीवास्तव' जी ने 'संपन्नता' पाठ में विनायक बाबू के परिवार के माध्यम से वास्तविक संपन्नता को परिभाषित किया है । **3**

विनायक बाबू बड़े साहब के बंगले की धन संपन्नता से अत्यधिक प्रभावित हुए थे । उनके चेहरे पर हताशा के भाव स्पष्ट झलक रहे थे । अपने अभावग्रस्त जीवन ने उन्हें बहुत ही उदास व निराश कर दिया था । विनायक बाबू 'क्या खोया और क्या पाया' के रूप में अपने जीवन का मूल्यांकन करने लगे। उन्होंने सोचा दुनिया कहाँ - से - कहाँ पहुँच गई है ! लोगों ने दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की करते हुए संपन्नता के शिखर को छू लिया है । दूसरी तरफ वे खुद वहीं विपन्नता से घिरे हुए संघर्षरत हैं। संपन्नता की दौड़ में वे काफी पिछड़ गए हैं । समाज में एक ओर बड़े साहब जैसे संपन्न व्यक्ति हैं जिनके पास सभी आधुनिकतम सुख सुविधाओं के साधन उपलब्ध हैं । हर दिन लाखों रुपए पानी की तरह बहा दिए जाते हैं । करोड़ों रुपए खर्च होने पर भी घर की सजावट से मन नहीं भरता है । दूसरी तरफ अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए विवश विनायक बाबू अब उन्हें अफसोस हो रहा था कि सही -

	गलत हर तरीके से पैसे कमाने की तरफ उनका ध्यान क्यों नहीं गया । काश ! उन्होंने जीवन के इन आदर्शों से समझौता नहीं किया होता तो आज उनका परिवार भी खुशहाल होता । उन्हें पैसों के लिए किसी के सामने विवश न होना पड़ता । विनायक बाबू की दयनीय स्थिति का कारण उनकी सत्यवादिता और ईमानदारी थी । इस प्रकार हताश विनायक बाबू घर पहुँचे तो उन्होंने जीवन के अभावों और अपने परिवार की विपन्नता के लिए खुद को दोषी अनुभव किया ।	
	ऊ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए ।	
1)	पलाश को 'पर्णपाती वृक्ष' कहा जाता है क्योंकि पलाश के सभी पत्ते वर्ष में एक बार गिर जाते हैं और यह पर्णविहीन हो जाता है ।	**1**
2)	सर्दी के मौसम में पलाश के पत्ते गिरते हैं और गर्मी के मौसम में इस पर नए पत्ते आते हैं ।	**1**
3)	परिच्छेद में पलाश की यह खासियत सूचित हुई है कि यह एक पर्णपाती वृक्ष है । इस वृक्ष पर झाड़ी के रूप में बड़े - बड़े पत्ते निकलते हैं । पलाश के जिन पेड़ों पर फूल निकलते हैं, वहाँ पत्ते नहीं निकलते और जहाँ पत्ते निकलते हैं, वहाँ फूल नहीं निकलते हैं ।	**1**
उ.**2.**	**क) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पठित पाठों में प्रयुक्त शब्दों से कीजिए । पूर्ण वाक्य लिखकर प्रयुक्त शब्द अधोरेखित कीजिए ।**	
1)	बोली **अकुलाई** लता ओट हो किवार की ।	**1**
2)	तुम विशाल **सिंधु** पर, खून से विजय लिखो ।	**1**
3)	और नहीं **पंखों** में भी गति ।	**1**
	ख) निम्नलिखित दिए गए प्रश्नों के उत्तर पठित कविताओं के आधार पर केवल एक - एक वाक्य में लिखिए ।	
1)	घाट पर पूरी व्यवस्था शौक से डूबने के लिए है ।	**1**
2)	कवि 'नीरज' ने जीवनभर उड़ते रहने की प्रेरणा खग के माध्यम से मनुष्य को दी है ।	**1**
3)	झरना वन के पेड़ - पौधों से टकराता हुआ और चट्टानों पर चढ़ता हुआ रोड़ों से लड़ता चलता है ।	**1**
	ग) निम्नलिखित दिए गए पठित पद्यांश के आधारपर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए ।	
1)	जन-मन को अब पीड़न और अन्याय नहीं सहना चाहिए ।	**1**
2)	समाज में शोषित लोग शेष नहीं रहने चाहिए ।	**1**
3)	यह पद्यांश 'जनगीत' पद्य से लिया गया है ।	**1**

	घ) निम्नलिखित पठित पद्यखंड का सरल गद्यार्थ लिखिए। **भावार्थ :** मनुष्य को आगे बढ़ते समय ज्यादा सोच - विचार नहीं करना चाहिए और कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। झरना हमें यह संदेश देता है कि मार्ग में कितनी भी रुकावटे क्यों न हो, कैसी भी स्थिति क्यों न हो परंतु हमें निरंतर आगे ही बढ़ते रहना चाहिए। इसी तरह युवावस्था का यह संदेश है कि हम सतत चलते रहें। हम यह न सोंचे कि लगातार चलते रहने से क्या लाभ होगा। यदि मनुष्य को जीवन में सफलता प्राप्त करनी है तो उसे निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए और कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि उसका फल कब मिलेगा ?	**3**
	ङ) निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं दो</u> प्रश्नों के उत्तर पठित पद्यपाठों के आधार पर संक्षेप में लिखिए :	
1)	सुप्रसिद्ध कवि 'सूरदास' जी ने 'सूरदास के पद' कविता में ब्रज की नारियों द्वारा माँ यशोदा से बालक कृष्ण की शिकायत मक्खन चुराने की शिकायत करने तथा बालक कृष्ण द्वारा चंद्र खिलौना पाने का हठ करने पर माँ यशोदा द्वारा कृष्ण को बहलाने का सुंदर सजीव चित्रण किया है। कृष्ण माँ यशोदा से चंद्रमा को पाने की जिद करते हैं।वे कहते हैं कि यदि मुझे चंद्रमा का खिलौना नहीं मिला तो मैं धौरी (सफेद) गाय का दूध नहीं पिऊँगा, सिर पर चोटी नहीं गूथने दूँगा, मोती की माला नहीं पहनूँगा और कुर्ता भी नहीं पहनूँगा। अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो मैं अभी जमीन पर लोट जाऊँगा और तेरी गोद में नहीं आऊँगा। मैं नंदबाबा का बेटा कहलाऊँगा, तेरा बेटा भी नही कहलाऊँगा। इस प्रकार चंद्रमा का खिलौना न मिलने पर कृष्ण अपनी माँ यशोदा को धमकी भरी बातें कह कर उनसे चंद्र खिलौना लाने की जिद करते हैं।	**3**
2)	कवि 'रहीम' जी 'रहीम के दोहे' कविता द्वारा हमें सहनशीलता, इज्जत की महत्ता,सही मौके पर अपने गुण प्रकट करने तथा समय का लाभ उठाने की सीख देते हैं। कवि रहीम जी के अनुसार सहनशीलता का बड़ा महत्त्व है। मनुष्य को सहनशील होना चाहिए। सुख और दुख तो एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। व्यक्ति के जीवन में कभी सुख आता है तो कभी दुख। हमें हर स्थिति का मुकाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिए। जैसे धरती पर कभी कड़ाके की शीत पड़ती हैं, कभी चिलचिलाती धूप तो कभी मूसलाधार बारीश जिसे वह बड़े ही धैर्य के साथ सहते रहती है, वैसे ही मनुष्य को जो भी सुख-दुख पड़े, उसे सहते रहना चाहिए। इस प्रकार रहीम ने सहनशीलता का महत्त्व धरती के उदाहरण द्वारा बड़े सरल ढंग से समझाया है।	**3**
3)	कवि 'सुमित्रानंदन पंत' जी ने 'जनगीत' कविता में सभी मानवों को एकता के सूत्र में एक हो जाने के संकल्प के साथ अन्याय, शोषण एवं उत्पीड़न को समाप्त कर 'मुक्तव्यक्ति' और संगठित समाज की कल्पना की है। कवि ने जनगीत कविता में एक नए विहान की कामना की है। ऐसे विहान के निर्माण के लिए आवश्यक है कि लोगों में निजी स्वार्थ की भावना न हो। समाज में कहीं भी शोषण या अन्याय नजर न आए। लोगों में आपसी प्रेम, परोपकार और एकता की भावना हो। लोगों के मन में किसी बात का	**3**

	डर न हो। लोग निर्भयता के साथ अपनी जिम्मेदारी निभाएँ। लोग विनाशकारी मदभेदों से दूर रहें। आपस में समानता की भावना हो। सबको विकास करने की पूरी स्वतंत्रता प्राप्त हो। समाज का उत्थान करने वाले लोगों को प्रमुखता दी जाए। व्यक्ति के गुणों का सम्मान हो। ऐसे नियम और कानून बने, जिनसे समाज के हर वर्ग को न्याय मिले। इस प्रकार 'जनगीत' कविता में नए विहान के लिए इन सभी बातों को आवश्यक माना है जिनसे एक आदर्श समाज की स्थापना होती है।	
उ.3.	**निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं दो</u> प्रश्नों के उत्तर पठित पूरक पाठों के आधार पर 70 - 80 शब्दों में लिखिए :**	
1)	सुप्रसिद्ध लेखिका गौरा पंत 'शिवानी' जी ने 'गंगा बाबू हैं कौन ?' पाठ में एक ऐसे व्यक्तित्व का वर्णन किया है जो अनेकानेक संस्मरणों का जीता - जागता शब्दकोश है। गंगा बाबू ने लेखिका शिवानी जी को लक्खी सराय के बालिका विद्यापीठ में बालिकाओं के विदाई कार्यक्रम में सस्नेह आमंत्रित किया था। उनके ठहरने का व्यवस्था वहाँ की अतिथिशाला में की गई थी। कार द्वारा लेखिका जब विद्यापीठ पहुँची तो उन्हें वहाँ की अतिथिशाला किऊल के बीहड़ स्टेशन से भी अधिक डरावनी लगी। उस रात वहाँ बिजली भी जा चुकी थी। बिना सजावट वाले कमरे में एक स्प्रिंग की पलंग रखी हुई थी। वहाँ न तो किसी चौकीदार की व्यवस्था थी और न ही आसपास कोई मकान था। लेखिका के वहाँ पहुँचने के कुछ समय बाद वहाँ विद्यापीठ का माली आया, जिसका डरावना रूप साक्षात यमदूत की याद दिलाता था। उसने लेखिका को लालटेन और मटके का पानी दिया और जाते - जाते खिड़की - दरवाजा ठीक से बंद करने की चेतावनी भी दी क्योंकि वहाँ कमरे में कभी - कभी करैत साँप घुस आने की संभावना भी थी। साँप के भय और सियारों तथा उल्लुओं की आवाजों ने लेखिका की उस रात की नींद उड़ा दी थी। इस प्रकार लेखिका शिवानी ने किसी तरह राम - राम करते हुए अतिथिशाला की भयानकता के बीच रात काटी।	**4**
2)	ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी को गर्मियों के दिनों में पत्र देने एक डाकिया उनके घर आया। वह नीचे बैठ गया और उनकी प्रतीक्षा करने लगा। विद्यासागर जी ने ऊपर की मंजिल से नीचे उतरकर देखा कि डाकिए को नींद आ गई थी। उन्होंने चिट्ठी ले ली और उसे पंखा झलने लगे। विद्यासागरजी के एक परिचित को यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कहा, कहाँ आप और कहाँ सात रुपए पानेवाला यह डाकिया। आप उसे क्यों पंखा झल रहे हैं? इसपर विद्यासागरजी ने जवाब दिया, ''मेरे पिता सात रुपए के वेतन से ही पूरे परिवार को पालते थे। वे भी इसी तरह भरी दोपहरी में काम पर जाया करते थे।'' इस प्रकार समाजसेवक ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी की महानता अपरिचित लोगों के प्रति भी दयाभाव रखने एवं उनकी मजदूरी का सम्मान करने से दृष्टिगोचर होती है।	**4**
3)	लेखक 'प्रवीण कारखानीस' जी ने 'थिंफू - भूटान की वर्तमान राजधानी' पाठ में वनसंपदा की खान भूटान के प्राकृतिक सौंदर्य का मनोहर वर्णन किया है।	**4**

	भूटान देश की अपनी मुद्रा है, जिसे 'गुलत्रम' कहते हैं। उसका मूल्य लगभग हमारे एक रुपए के बराबर ही है। सौ छेलत्रम का एक गुलत्रम बनता है। भूटान आनेवाले विदेशी अपनी मुद्रा को भूटानी मुद्रा में परिवर्तित कराते हैं लेकिन भारत से आनेवाले लोगों के लिए यह आवश्यक नहीं है। इसका कारण यह है कि भूटान में भारतीय मुद्रा का आम प्रचलन है। वहाँ भूटानी मुद्रा के साथ-साथ भारतीय मुद्रा का भी लेन-देन में प्रयोग किया जाता है। यही कारण है कि भूटान जाते समय भारतीयों को डॉलर खरीदने का झंझट नहीं रहता।	
4)	ईसाई धर्म के लोग भी हिंदुओं की तरह तुलसी को पवित्र मानते हैं। अंग्रेजी में इसे 'बेसिल' या 'सेक्रेट बेसिल' यानी 'पवित्र तुलसी' कहते हैं। कहते हैं कि ईसाइयों में तुलसी के पौधे को पवित्र माने जाने का मुख्य कारण यह है कि यह पौधा ईसा मसीह (क्राइस्ट) की कब्र पर उगा था। फ्रांस के लोग तुलसी को 'ल प्लांती रोयली' अर्थात 'राजसी पौधा' कहते हैं। इटली और ग्रीस के लोग तुलसी के गुणों से परिचित थे। यही कारण है कि संत बेसिल दिवस पर स्त्रियाँ तुलसी की टहनियों को गिरजाघर में ले जाती हैं और घर वापस आने पर उन टहनियों को फर्श पर बिखेर देती हैं। जिससे आने वाला वर्ष लाभकारी हो। कुछ पत्तियों को खा लेने और कुछ को अपने वार्डरोब में चूहे व कीड़े भगाने के लिए प्रयोग करने की प्रथा भी है। इस प्रकार ईसाई धर्म में तुलसी को पवित्र व रोग विनाशक माना गया है।	**4**
	अथवा **निम्नलिखित पठित पूरक पाठों में से <u>किसी एक</u> का सार लिखिए :**	
1)	सुप्रसिद्ध लेखक 'हरिशंकर परसाई' जी ने 'अपनी - अपनी बीमारी' पाठ में अमीरी और गरीबी में अंतर को अपने हास्य - व्यंग्यात्मक तरीके से बताने का प्रयास किया है। 'अपनी - अपनी बीमारी' पाठ में परसाई जी ने लोगों की अपनी - अपनी परेशानी को सटीक हास्य - व्यंग्य शैली में प्रस्तुत किया है। लेखक के अनुसार इस संघर्षपूर्ण संसार में किसी व्यक्ति का जीवित रहने के लिए संघर्ष जारी है तो किसी व्यक्ति का संघर्ष अपनी संपन्नता को बनाए और बचाए रखने के लिए है। धनी वर्ग अंतहीन टैक्स की बीमारी से जकड़ा हुआ है। पुस्तक - विक्रेता बंधु पुस्तकों की कम बिक्री से दुखी है। गांधी - प्रतिष्ठान में कार्यरत ईमानदार व्यक्ति वहाँ की बेईमानी से व्यथित है। आठ कमरोंवाले मकान का निर्माता पैसों के अभाव में छह कमरे ही बना पाने के कारण दुखी है। एक अन्य व्यक्ति को रोटरी मशीन आ जाने के बाद मोनो मशीन मिलने में हो रही परेशानी का दुख है। लेखक भी अपने बिजली के बिल को ना भर पाने की समस्या से परेशान है। लेखक ने बड़े अमीरों से अनुरोध किया है कि वे अपने धन का कुछ हिस्सा भी यदि दान कर दें तो गरीबों को इससे बड़ी मदद मिलेगी और बड़े अमीरों को भी भारी टैक्स की बीमारी से मुक्ति मिल जाएँगी। इस प्रकार प्रस्तुत पाठ 'अपनी - अपनी' बीमारी में समाज के भिन्न - भिन्न वर्ग के लोगों की कठिनाईयों पर प्रकाश डालना ही लेखक का उद्देश्य है।	**8**

2)	गंगा बाबू हैं कौन ? शिवानी जी द्‌वारा लिखित एक प्रसिद्‌ध संस्मरण है । इस संस्मरण में शिवानी जी ने एक ऐसे व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है जो स्वयं असंख्य संस्मरणों के जीते - जागते शब्दकोश थे । गंगा बाबू का नाटा - सा कद, भारी - भरकम शरीर, सरल वेशभूषा, गंभीरता के लिए मुख - मंडल को रौशन करती हुई उनकी मोहक मुस्कान सहज ही सभी को आकर्षित कर लेती थी । शिवानी जी को लिखे एक प्रोत्साहन पत्र में गंगा बाबू ने संस्मरण कला का सार कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया था, ''संस्मरण ऐसा हो जिसे कभी देखा भी न हो, उसकी साक्षात छवि ही सामने आ जाए, उसका क्रोध, उसकी परिहास रसिकता, उसकी दयालुता, उसकी गरिमा, उसकी दुर्बलता सब कुछ सशक्त लेखनी आँकति चली जाए, वहीं उसकी सच्ची तस्वीर है, वही सफल संस्मरण है ।'' गंगा बाबू से लेखिका का परिचय लगभग दस वर्ष पूर्व हुआ था । शिवानी जी ने गंगा बाबू को संस्मरणों को अथाह खजाने के रुप में अनुभव किया । किसी गोष्ठी की अध्यक्षता करनी हो, या किसी अनुष्ठान के लिए आमंत्रित करना हो, गंगा बाबू हमेशा हिंदी के साहित्यकारों से अनुरोध करना नहीं भूलते थे । फिर चाहे वे महादेवी जी हो या शिवानी जी । गंगा बाबू के ऐसे ही आत्मीय आग्रह पर शिवानी जी लक्खी सराय की बालिका विद्‌यापीठ के 'कन्याओं की विदा' के कार्यक्रम में उपस्थित हुई थी । यह विद्‌यालय प्रथम राष्ट्रपति बाबू राजेंद्र प्रसाद जी की प्रिय शिक्षण - संस्था थी । इसी विद्‌यापीठ के अहाते में गत वर्ष गंगा बाबू के आग्रह पर महादेवी जी ने वृक्ष लगाया या और इस वर्ष शिवानी जी ने उसी वृक्ष के पास एक पौधा लगाया । कन्याओं की विदाई के अवसर पर आमंत्रित शिवानी जी की चार दिनों तक गंगा बाबू ने जिस आत्मीयता से देखभाल की थी, उसे लेखिका कभी भूला नहीं पाई । वहाँ से चलते समय उन्होंने लेखिका को इतनी सौगातें बाँध दी, जैसे वे लेखिका के रूप में अपनी पुत्री को विदा कर रहे हो । गंगा बाबू के अनुरोध पर ही लेखिका बाबू राजेंद्र प्रसाद जी की मूर्ति का अनावरण करने के लिए पटना भी गई थीं । कुछ महीनों पहले वे लखनऊ में भी गंगा बाबू से मिली थीं । वहाँ हिंदी संस्थान के किसी आयोजन में बीमारी की हालात में भी वे आए थे । गंगा बाबू हिंदी के एक सच्चे सफल सेनानी थे । उन्हें कभी किसी प्रशस्ति या यश - ख्याती की भूख नहीं रही । वे जीवनभर हिंदी के लिए संघर्षरत और समर्पित रहे । गंगा बाबू ने कभी - भी अपने कृतित्व का प्रचार नहीं किया । कम से कम हिंदी के लिए समर्पित व्यक्तियों संस्थाओं को अखिल भारतीय हिंदी संघ की स्थापना करने वाले गंगा बाबू (गंगा शरण सिंह जी) को नहीं भूलना चाहिए । सचमुच गंगा बाबू हिंदी के एक तपः पूत थे ।	**8**
उ.**4**.	**च) निम्नलिखित शब्दों में से <u>किसी एक</u> शब्द का स्वतंत्र एवं अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए :**	
1)	<u>काश !</u> मैं पढ़ाई करता ।	**1**
2)	बच्चों के <u>लिए</u> भी कुछ दीजिए ।	**1**
	छ) निम्नलिखित वाक्यों में से <u>किसी एक</u> वाक्य में अधोरेखांकित शब्द का शब्दभेद लिखिए :	
1)	**उसने** - सर्वनाम	**1**
2)	**धीरे - धीरे** - अव्यय	**1**

ज) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य का कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार काल - परिवर्तन कीजिए :

1) आनंद का क्षण **आया था।** **1**

2) माँ चिंता में **पड़ी।** **1**

झ) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य में प्रयुक्त सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए :

1) करो (करना) सहायक क्रिया । **1**

2) गई (जाना) सहायक क्रिया । **1**

अथवा

निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक क्रिया का सहायक क्रिया के रूप में अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए।

1) वाक्यः- राधा कुछ कह नहीं पाई । **1**

2) वाक्यः- उन्हें गुस्से में देख मुझसे कुछ कहते नहीं बना । **1**

ट) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक क्रिया के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियारूप लिखिए :

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थकरूप	द्वितीय प्रेरणार्थकरूप
महकना	महकाना	महकवाना
पूछना	पुछाना	पुछवाना

1) **1**

2) **1**

अथवा

निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य में प्रयुक्त प्रेरणार्थक क्रियारूप छाँटकर उसका प्रकार लिखिए :

1) बजाई - प्रथम प्रेरणार्थकरूप । **1**

2) भिजवाया - द्वितीय प्रेरणार्थक रूप । **1**

ठ) निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए:

1) पंडित परमसुख की नाक सिकुड़ गईं । **1**

2) प्रकृतिसौंदर्य का जादू काम कर गया । **1**

3) शराबी का नशा उतर गया । **1**

अथवा

निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों के लिए योग्य विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए:

1) मैंने कहा, ''भैया मत रोओ, सिर दुखेगा ।'' **1**

2) इसे संस्कृत में 'किंशुक' (क्या यह शुक है ?) कहा गया है । **1**

3) ये बरगद, नीम, पीपल आदि के समान फैले हुए होते हैं । **1**

	(ड) निम्नलिखित मुहावरों में से <u>किन्हीं तीन</u> मुहावरों के हिंदी में अर्थ देकर उनका अर्थपूर्ण एवं स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए:	
1)	**साफ कर देना** – खत्म या नष्ट कर देना । वाक्य : नौकर ने मौका पाकर सेठ जी की तिजोरी **<u>साफ कर दी</u> ।**	**1**
2)	**ढाक के तीन पात** – सर्वत्र एक जैसी स्थिति का होना । वाक्य : रमणीकलाल ने साल भर में कई तरह के धंधे बदले, पर कमाई वही **<u>ढाक के तीन पात !</u>**	**1**
3)	**बिजली की तरह फैलना** – तेजी से फैलना । वाक्य : दामिनी के साथ हुए अत्याचार की खबर चारों ओर **<u>बिजली की तरह फैल गई</u>** ।	**1**
4)	**जान आफत में आना** – संकट से गुजरना । वाक्य : रानी लक्ष्मीबाई को युद्ध भूमि में देखकर अंग्रेजों की **<u>जान आफत में आ जाती थी</u>** ।	**1**
5)	**जान के लाले पड़ना** – प्राण संकट में होना । वाक्य : शिकारी के जाल में फँसी हुई चिड़िया की **<u>जान के लाले पड़ गए</u>** ।	**1**
	अथवा **निम्नलिखित वाक्यों में से <u>किन्हीं तीन</u> वाक्यों में अधोरेखांकित वाक्यांशों के बदले कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से योग्य मुहावरे का प्रयोग करके शुद्ध वाक्य फिर से लिखिए :**	
1)	गाँधीजी के दर्शन के लिए आश्रम में हमेशा लोगों का **<u>ताँता बँधा रहता था</u>** ।	**1**
2)	मानसून की वर्षा आरंभ हुई तब कहीं जाकर किसानों की **<u>जान में जान आई</u>** ।	**1**
3)	सीमा पर देश की रक्षा के लिए हमारे जवानों के **<u>कान खड़े रहते हैं</u>** ।	**1**
4)	एकाएक डाकू को सामने देखकर मुनीम **<u>सिहर उठा</u>** ।	**1**
5)	मोहन ने अपनी गलती के लिए पिता के **<u>पैर पकड़ लिए</u>** ।	**1**
उ.**5**.	**निम्नलिखित विषयों में से <u>किसी एक</u> विषय पर लगभग 150- 200 शब्दों तक निबंध लिखिए:**	
1)	Refer MT Edu Solution - Hindi Booklet No - 4- Page No.97 - Q.2	**10**
2)	Refer MT Edu Solution - Hindi Booklet No - 4- Page No.110 - Q.15	**10**
3)	Refer MT Edu Solution - Hindi Booklet No - 4- Page No.131 - Q.36	**10**
4)	Refer MT Edu Solution - Hindi Booklet No - 4- Page No.134 - Q.40	**10**
उ.**6**.	(त) **निम्नलिखित कार्यालयीन तथा व्यावसायिक पत्रों में से <u>किसी एक</u> पत्र का प्रारूप (नमूना) लिफाफे सहित तैयार कीजिए :**	
1)	Refer MT Edu Solution - Hindi Booklet No - 1- Page No.186 - Q.1	**4**
2)	Refer MT Edu Solution - Hindi Booklet No - 1- Page No.194 - Q.11	**4**

	(थ) निम्नलिखित रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखिए। यह भी दर्शाइए कि उससे क्या सीख मिलती है। Refer MT Edu Solution - Hindi Booklet No - 1- Page No. 201 - Q. 3	4
(द)	निम्नलिखित अपठित गद्यखंड पर आकलन हेतु ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक - एक वाक्य में हो : Refer MT Edu Solution - Hindi Booklet No - 4- Page No. 80 - Q.1	4

❐❐❐❐❐